

Padma Shri



SHRI JAGDISH CHAUDHARY (POSTHUMOUS)

Shri Jagdish Chaudhary was the lord of Varanasi's famed cremation ghats, popularly known as “Dom Raja” . He was the head of the 'Dom clan' (pyre burners or cremators) in the city performing last rites. He represented the eternal traditions of the holy city of Kashi.

2. Born on 18th May, 1974 on the banks of river Ganga in Kashi, Shri Chaudhary was only 10 years old when his father passed away. He was supported by his 2 brothers and 4 sisters.

3. According to Hindu mythology, the Doms were cursed by Lord Shiva when a member from their community named Kallu Dom tried to steal an earring of the goddess Parvati. To gain forgiveness, they agreed to become the keepers of the flame. It's a big climb-down from the days of Kallu; his ancestor and the first Dom Raja, who according to Indian mythology, had kept the vow-abiding King Harishchandra as an apprentice. Ironically, however, the Dom Rajas are keepers of the sacred Flame revered by all Hindus. No matchstick is used at the ghats. Everyone must use the sacred fire that has been burning for centuries in Dom Raja's hearth. The fire and the burning at Varanasi Ghats, as the Hindu belief goes, liberates one from the everlasting cycle of life and death.

4. Shri Chaudhary was the leader of a two- tier hierarchy of Doms - all of whom are given duties as per the roster. The Dom Raja not only presides over any disputes at the ghats but he gets maximum number of duties.

5. Shri Chaudhary was a very prominent social worker in Kashi. As a Raja or as Dom Raja his duties were not only to support his near one's but also to 5000 families of Dom who are financially weak and wants support both physically and financially. He was anytime available, and also encouraged education not only in his society but to every seeker of the society. He was very down to earth man with very simple living.

6. Shri Chaudhary passed away on 25th August, 2020.



श्री जगदीश चौधरी (मरणोपरांत)

‘डोम राजा’ के नाम से लोकप्रिय स्वर्गीय श्री जगदीश चौधरी वाराणसी के प्रसिद्ध श्मशान घाटों के स्वामी थे। वह शहर में अंतिम संस्कार करने वाले ‘डोम जाति’ के मुखिया थे। वह पवित्र काशी नगरी की शाश्वत परंपराओं के वाहक थे।

2. 18 मई, 1974 को काशी में गंगा नदी के किनारे जन्मे श्री चौधरी जब सिर्फ 10 वर्ष के थे तो उन्होंने अपने पिता को खो दिया। उनके दो भाइयों और चार बहनों ने उनका पालन पोषण किया था।

3. हिंदू पुराणों के अनुसार, डोम समाज के एक सदस्य कल्लू डोम द्वारा देवी पार्वती की कान की बाली चुराने पर भगवान शिव ने उन्हें श्राप दे दिया। उन्होंने क्षमा मांगी और अग्नि की रखवाली करने का वचन दिया। कल्लू उनके पूर्वज और पहले डोम राजा, जिन्होंने भारतीय पुराणों के अनुसार वचन के पक्के राजा हरिश्चंद्र को अपना शिष्य बनाया था, के युग से अब तक इस समुदाय की सामाजिक स्थिति का बहुत पतन हो गया है। विडम्बना यह है कि डोम राजा उस पवित्र अग्नि के रखवाले हैं जो सभी हिंदुओं के लिए पूजनीय है। घाटों पर माचिस का इस्तेमाल नहीं किया जाता। हर किसी को उस पवित्र अग्नि का इस्तेमाल करना होता है जो सदियों से डोम राजा के कुण्ड में प्रज्वलित रहती आ रही है। हिंदू आस्था के अनुसार यह अग्नि और वाराणसी के घाटों पर अंतिम संस्कार, मनुष्य को जीवन और मृत्यु के अनवरत चक्र से मुक्त कर देता है।

4. श्री चौधरी डोम जाति के दो स्तर वाले पदक्रम के मुखिया थे और सभी को बारी-बारी से दायित्व सौंपा जाता था। डोम राजा न सिर्फ घाटों पर होने वाले सभी विवादों को सुलझाने के लिए बैठक की अध्यक्षता करते हैं बल्कि उन्हें सबसे अधिक दायित्व निभाने पड़ते हैं।

5. श्री चौधरी काशी के सुविख्यात समाज सेवी थे। एक मुखिया या डोम राजा के रूप में उन्हें अपने परिजनों के साथ उन 5000 डोम परिवारों की भी मदद करते थे जो आर्थिक रूप से कमजोर थे और जिन्हें व्यक्तिगत और आर्थिक दोनों प्रकार की मदद की जरूरत होती थी। वह उनकी मदद के लिए हर समय उपलब्ध रहते थे और न केवल अपने समाज बल्कि हर इच्छुक व्यक्ति की शिक्षा को बढ़ावा दिया करते थे। वह बहुत सरल और सीधे-सादे व्यक्ति थे।

6. श्री चौधरी का 25 अगस्त, 2020 को देहांत हो गया।